डी०पी०ओ० एवं सी०डी०पी०ओ० लीडरशिप डेव्लपमेंट कोर्स

ट्रेनिंग ऑफ ट्रैनर

खेल-आधारित शिक्षा

खेल-आधारित शिक्षा क्या है?

जिससे बच्चों को आनंद मिलता है।

नई-नई कौशल विकसित करने में मदद करती है।

अपनी भौतिक-सामाजिक दुनिया की विशेषताओं को खोजने और सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

स्वतंत्र, स्वाभाविक और रचनात्मक क्रिया है।

बच्चे अपने हाथों और इंद्रियों का उपयोग अपने आस-पास की चीज़ों का पता लगाने और खोज करने के लिए करते हैं

खेल-आधारित शिक्षा क्या है?

स्वतंत्र, स्वाभाविक और रचनात्मक क्रिया है।

जिससे बच्चों को आनंद मिलता है।

बच्चे अपने हाथों और इंद्रियों का उपयोग अपने आस-पास की चीज़ों का पता लगाने और खोज करने के लिए करते हैं

अपनी भौतिक-सामाजिक दुनिया की विशेषताओं को खोजने और सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

नई-नई कौशल विकसित करने में मदद करती है।

खेल का महत्व

बच्चों में सर्वांगीण विकास
संज्ञानात्मक विकास
सामाजिक विकास
भाषा का विकास
भावनात्मक विकास
रचनात्मक विकास
शारीरिक विकास

खेल के प्रकार

प्रकार

खेल की प्रकृति और बच्चों में विकसित हो रही शारीरिक, संज्ञानात्मक और रचनात्मक कौशलों के आधार पर

- फंक्शनल प्ले (functional play)
- प्रीटेंड प्ले (pretend play)
- कंसट्रकटिव प्ले (constructive play)
- नियम वाले खेल

सामाजिक कौशलों पर आधारित

- अनओकक्यूपाईड प्ले (unoccupied play)
- सौलिटरी प्ले (solitary play)
- ऑनलूकर प्ले (onlooker play)
- पैरलल प्ले (parallel play)
- असोसिएटिव प्ले (associative play)
- कोओपरटिव प्ले (cooperative play)

संरचित और असंरचित खेल

संरचित खेल

- ✓ खेल के नियम व लक्ष्य पहले से निर्धारित होते हैं।
- ✓ बच्चों के विकास के लक्ष्य निर्धारित होते हैं।

जैसे - पज़ल से संज्ञानात्मक कौशलों का विकास
टीम आधारित खेल से सामाजिक कौशल
- नियम वाले खेल

असंरचित खेल

- ✓ पहले से निर्धारित लक्ष्य नहीं होते हैं।
- ✓ बच्चे किसी पूर्व-निर्धारित विशिष्ट नियम या परिणाम से बंधे नहीं होते हैं
- ✓ बच्चे स्वयं खेल की रचना करते हैं
जैसे - प्रीटेंड प्ले, मुक्त चित्रकारी

आंगनवाड़ी केंद्र पर खेल और खेल आधारित गतिविधि होते हैं

खेल

- ✓ बच्चों द्वारा, अपनी रूचि और कल्पना के अनुसार, स्वयं संचालित किया जाता है।
- ✓ आंगनवाड़ी कार्यकत्री की भूमिका, एक प्रेक्षक या साथी के रूप में हैं।
- ✓ बच्चों के सीखने और विकास मे प्रगति का स्तर, उनके स्वाभाविक जिज्ञासा, रचनात्मकता, रूचि और खोज करने की क्षमता से प्रभावित होती है

आंगनवाड़ी केंद्र पर खेल कब होता हैं ?

- दूसरे सत्र में सीखने के कोनों में "स्वतंत्र खेल" के समय
- तीसरे सत्र में "बच्चों द्वारा निर्मित या संचालित किए गए बाहरी खेल" के दौरान
- पूरे दिन के दौरान बच्चों द्वारा स्वयं पहल की गई बातचीत, गतिविधि, भावगीत आदि

खेल आधारित गतिविधि

- ✓ कार्यकत्री के निर्देशों के अनुसार संचालित किया जाता है।
- ✓ बच्चे बताए गए कार्य और निर्देशों का पालन करते हैं।
- ✓ कार्यकत्री बच्चों को उनके आयु के अनुसार सीखने और विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने मदद करतीं हैं।

आंगनवाड़ी केंद्र पर खेल कब होता हैं ?

- प्रथम सत्र की गतिविधियों के दौरान
- दूसरे सत्र में "निर्देशित गतिविधियों" के समय
- तीसरे सत्र में "नियम आधारित या सामूहिक बाहरी खेल" के दौरान
- चौथे सत्र में "विद्यालय की तैयारी" की गतिविधियां, संरचित रचनात्मक गतिविधियां जैसे "ओरिगामी"

खेल-आधारित एप्रोच में आंगनवाड़ी कार्यकत्री की भूमिका

ऐसा खेल का वातावरण बनाएं जहाँ बच्चे सुरक्षित और उत्साहित हों

बच्चों को खेलते समय ध्यान से देखें। इससे उनकी रुचियों और विकासात्मक मील के पत्थरों के बारे में जानने में मदद मिलती है

जहाँ आवश्यक हो वहाँ मार्गदर्शन करें:

-प्रश्न पूछें या उत्तर दें

-खेल को आगे बढ़ाएँ

-विभिन्न खेल के अवसरों पर ध्यान केंद्रित करें

लचीला बनें

विभिन्न प्रकार के खेल के अवसरों का निर्माण करें